AG Publishing House

Sustainable Tourism Development & Management for Viksit Bharat – Opportunities & Challenges

AG PH Books

Year: 2026

जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र पर सम्पोषित पर्यटन का प्रभाव (विन्ध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ में)

डाॅ. सतीश कुमार गर्ग[1*], मधुलिका तिवारी

[1]प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग स्वामी विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय मैहर, जिला-मैहर (म.प्र.)

Abstract

विश्व में आज 17 बड़े जैव विविधता वाले देश है, जिनमें भारत का स्थान 8वाँ है। जैविक विविधता में धनी देशों की संबन्धित परम्परागत ज्ञान, समान, विचार वालों का समूह बनाने को प्रेरित किया जिसका अध्यक्ष भारत मार्च 2004 से मार्च 2006 तक रहा है। भारत आज जैव विविधता के संरक्षण में विश्व मंच पर बढ़–चढ़ कर भाग लेने वाला एवं इनके संरक्षण की दिशा में कार्य करने वाला प्रमुख देश बन गया है। भारत के अधीन विश्व का 2–5 प्रतिशत भूक्षेत्र है जिसमें विश्व के लगभग 7.5 प्रतिशत पहचानित जीव प्रजातियाँ है जो हमारे लिये गौरव की बात है। विन्ध्य प्रदेश भी अपने आप में कई जैव विविधता पर आधारित पर्यटन केन्द्र स्थल रहा है।

मुख्य शब्द–जैव विविधता, पारिस्थितिकी तंत्र, सम्पोषित, जैव संरक्षण

1 प्रस्तावना.

जैविक विविधता (Biological diversity) का संक्षिप्त रूप ही जैव विविधता (Biodiversity) है। जीवित प्राणियों के बीच मिलने वाली सभी विभिन्नताएँ जैविक विविधता कहलाती है।[प] एक प्रजाति से दूसरे प्रजातियों के बीच का अंतर एक ही प्रजातियों में मिलने वाला अन्तर तथा परितंत्र में अन्तर जैव विविधता का ही उदाहरण है अर्थात जीवित प्राणियों के बीच का अन्तर तथा जिस जैविक जटिलताओं में वह रहता है, उसका अन्तर ही जैव विविधता है। जीव मंडल (BIOSPHERE) में उपलब्ध जीवों क संख्या, प्रजाति तथा अन्तर में विभिन्नताओं के कुल योग ही जैव विविधता कहलाता है।[पप]

जैव विविधता प्रकृति द्वारा प्रदत्त अनुपम सुन्दरता की श्रेणी में आता है। जैव विविधता हमें जहाँ तरह–तरह के खाद्यान्न सब्जियाँ, फल–फूल एवं विभिन्न उपयोगी वस्तुएँ प्रदान करती है वही दूसरी ओर जैविक विविधता में पर्यटन के लिए मनोरंजन तथा संसाधन उपलब्ध कराती है। यही कारण है कि आज दुनिया के वे तमाम देश जो जैव विविधता के भंडार के नाम से जाने जाते हैं उन तमाम देशों में जैव विविधता संरक्षण पर आधारित सम्पोषित पर्यटन (Topurism) को बहुत अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है।[पपप] सम्पोषित पर्यटन एक ऐसी गतिविधि के रूप में आरंभ हुआ है जो प्रकृति के संरक्षण के साथ–साथ मनोरंजन एवं रोजगार भी प्रदान करता है। यही कारण है कि जैव विविधता पर आधारित पर्यटन को आज सभी देशों की सरकारें बढ़ावा दे रही हैं।

* ISBN No. 978-93-7640-929-7

2 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

जैव विविधता सम्पोषित पारिस्थितिकी की एक नवीन संकल्पना है। जैव विविधता पादपों, प्राणियों एवं सूक्ष्म जीवों में पायी जाने वाली विभिन्न किस्मों तथा विविधताओं एवं भिन्नताओं को प्रदर्शित करती है। वाल्टर जी, रोसेन (1986) के अनुसार–"पादपों, जन्तुओं एवं सूक्ष्म जीवों की विविध प्रकार तथा विभिन्नता ही जैव विविधता है।"

जैव विविधता पर हालांकि पिछली शताब्दी में कार्य हुआ परन्तु अभी भी इसकी कार्मिक भूमिका एवं महत्व की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध नहीं है। जैव वैज्ञानिकों ने जैव–विविधता के विश्व वितरण प्रतिरूप में अत्यधिक असमानता पाई है। जिसका मुख्य कारण–जलवायु में भिन्नता, मृदा की बनावट, भौगोलिक स्थिति, सागर सतह से ऊँचाई आदि है। इंटरनेशनल यूनियन ऑफ बॉयलॉजिकल साइसेंज ने पहली बार 1983 में 'स्पीशीज डायवर्सिटी एण्ड इट्स सिग्निफिकेन्स' पर सेमीनार आयोजित किया।

जैव विविधता एवं सम्पोषित पर्यटन में जैव संरक्षण एवं पारिस्थितिकी पर्यटन को सम्मिलित किया जाता है। इसमें एक तरफ पारिस्थितिकी की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है वही दूसरी ओर लोगों की मनोरंजन एवं आनन्द की प्राप्ति होती है। स्थानीय लोगों को रोजगार के नये–नये कौशलों का ज्ञान के साथ ही पिछड़े क्षेत्रों का स्वयमेव विकास आरम्भ हो जाता है। जैव विविधता पर आधारित पर्यटन को यदि देखा जाय तो इसमें सामाजिक, आर्थिक, एवं पर्यावरणीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सद्भाव के विकास की अपार संभावनयें है। जैव विविधता पर आधारित पर्यटन में जीवों को नुकसान पहुँचाए बिना ही हम जैविक संसाधनों का दोहन करते है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध पत्र ''**जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र पर सम्पोषित पर्यटन का प्रभाव (विन्ध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ में)**'' का प्रमुख उद्देश्य जैव विविधता पर आधारित विन्ध्य प्रदेश के पर्यटन स्थलों का अध्ययन करना रहा है। शोध पत्र के कुछ प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार रहे हैं–

- विन्ध्य प्रदेश में जैव विविधता एवं सम्पोषित पर्यटन आकर्षण का अध्ययन करना।
- विन्ध्य प्रदेश में प्राकृतिक, आकर्षण, ग्रामीण धरोहर, वन्य जीव आकर्षण ऐतिहासिक आकर्षण, धार्मिक जैविक एवं अन्य सम्पोषित पारिस्थितिकी आकर्षणों का अध्ययन करना।
- विन्ध्य प्रदेश में जैविक विविधता एवं पारिस्थितिकी पर आधारित पर्यटन विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।
- विन्ध्यप्रदेश में स्थित 03 राष्ट्रीय उद्यान क्रमशः बांधवगढ़, पन्ना एवं संजय गाँधी राष्ट्रीय उद्यान की जैविक विविधता एवं वन्य जीवों का आकर्षण का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोत के अंतर्गत विन्ध्य प्रदेश के अंतर्गत आने वाले जिलों से जिला सांख्यकीय पुस्तिका, पर्यटन कार्यालय से प्राप्त जानकारी आदि का प्रयोग किया गया है।

जैविक विविधता (वन्यजीव) एवं सम्पोषित पर्यटन–

विन्ध्य प्रदेश में विभिन्न प्रकार के वन्य प्राणियों, पक्षियों एवं रंग बिरंगे तितलियों तथा विलक्षण वन्य प्राणियों के आकर्षण के कारण राष्ट्रीय उद्यानों एवं अभ्यारण्यों में भ्रमण के लिए बड़ी संख्या में देशी एवं विदेशी पर्यटक आते है। यहाँ पर्यटन का मुख्य आधारभूत तत्व वन्य प्राणी है।

विन्ध्य प्रदेश के संधन वनों, पर्वतों एवं घाटियों तथा चारागाह मैदानों में वन्य प्राणियों की सघनता अत्याधिक है। क्योंकि शोधार्थी द्वारा अवलोकन किये जाने पर ये वन्य प्राणी विर्भय एवं स्वतंत्र रूप में छलांग लगाते हुए वनों, राष्ट्रीय उद्यानों एवं अभ्यारण्यों में विचरण करते हुए दिखायी दिये है। जैसे बाघ, तेंदुआ, हिरण, चौसिंघा, सियार, भालू, नीलगाय, लोमड़ी आदि। वन्य जीव पर्यटन की दृष्टि से विन्ध्य प्रदेश अत्यधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस क्षेत्र में वन्य जीव पर्यटन केन्द्रों की संख्या अधिक है। तथा म.प्र. सरकार भी वन्य जीवन पर्यटन केन्द्रों का विकास करने के लिए राष्ट्रीय उद्यानों को अनुदान प्रदान कर रही है। ताकि शैलानी वन्य प्राणियों के आकर्षण के कारण आ सके और प्राकृतिक स्थलों का आनन्द प्राप्त कर सके।

प्रकृति के सौन्दर्य से भरे वनों से गुजरते हुए जो मानसिक व शारीरिक सुख व शान्ति मिलती है वह किसी तीर्थ यात्रा से कम नहीं होती है। वनों में भ्रमण को मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के लिए प्रकृति की सर्वोत्तम स्वास्थ्य क्रिया बताया गया है। दुःख एवं तनाव के क्षणों में प्राकृतिक सौन्दर्य से भरे वनों के भ्रमण को मन को शान्ति एवं सान्त्वना देने का अचूक साधन माना गया है।[पअ]

किसी भी प्रदेश की वनस्पतियों व जीवजन्तु वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ाते है यही करण है कि वनस्पतियों को प्राकृतिका आभूषण माना गया है। विन्ध्य प्रदेश के वन कई पकार की पादप प्रजातियाँ एवं जीव प्रजातियों की विविधता के लिए जाने जाते हैं। यहाँ की हरी–भरी वनस्थली घास के मैदान, घने वन, वनों में विचरण करते जीव जन्तु, रंग–बिरंगे पक्षी, प्रवासी पक्षी, औषधीय वनस्पतियाँ, रंग–बिरंगी तितलियाँ, हरी–भरी घाटियों का सौन्दर्य प्रकृति प्रेमी पर्यटकों का स्वर्ग है। विन्ध्य प्रदेश के उच्चावच एवं संरचना की विभिन्नता, जलवायु की अनुकूलता, मृदा भिन्नता, जलीय स्रोत एवं नदियों ने जैव विविधता के लिए आदर्श स्थल बनाया है। यही करण है कि यहाँ लगभग 37 प्रजाति के स्तनपायी, 250 प्रजाति के पक्षी, 15 पजाति के सरीसृप, 70 प्रजाति की तितलियाँ रिकार्ड की गई है। इसके अतिरिक्त यहाँ घने वनों में 700 प्रजाति के पादप है। लगभग 500 प्रजाति के कीट व पतंगे पाये गये है। विन्ध्य प्रदेश में पायी जाने वाली यह जैव विविधता ही पर्यटन के लिए आकर्षण प्रदान करती है।

विन्ध्य प्रदेश में जैव विविधता एवं सम्पोषित पर्यटन आकर्षण–

विन्ध्य प्रदेश में जैव विविधता एवं वन्य जीव पर आधारित पर्यटन आकर्षण को यहाँ के घने वनों, राष्ट्रीय उद्यानों, अभ्यारण्यों एवं चिड़ियाघर में देखा जा सकता है। किसी भी प्रदेश में जैव विविधता वन्य जीवों पर आधारित पर्यटन आकर्षण एवं इसके विकास के लिए कुछ आधारभूत तत्वों की आवश्यकता होती है। इस तत्वों में से तीन आधारभूत तत्व प्रमुख है–आवास, परिवहन, एवं पर्यटन आकर्षण। जैव विविधता एवं वन्य जीवों पर आधारित पर्यटन की सफलता निम्न कारकों द्वारा निर्धारित होती है[अ]– (1) आकर्षण, (2) सहज पहुँच, (3) सुविधायें।

आकर्षण–

पर्यटन स्थल में आकर्षण का गुण पहली प्राथमिकता है। आकर्षण से आशय सुन्दर जीवों का आकर्षण एवं विविधता से है। चित्ताकर्षक वन्य जीवों का स्वच्छन्द विचरण एवं रंग–बिरंगे पक्षियों का कलरव एवं उनका दर्शन मानव मन को मुग्ध करने वाला होता है। विन्ध्य प्रदेश के वनों में यह आकर्षण मौजूद है।

सहज पहुँच–

किसी भी पर्यटक स्थल पर पहुँचने के लिए परिवहन के साधन एवं यात्रा मार्गों की दशा तथा प्रकार पर्यटकों के लिए आकर्षण को जन्म देते है। यदि जैव विविधता केन्द्र तक सहज एवं सुविधापूर्ण पहुँच की सुविधा उपलब्ध होती है तो पर्यटक उसकी ओर आकर्षित होते है और यदि सहज पहुँच की सुविधा उपलब्ध नहीं होती है तो पर्यटक उस स्थल की ओर उन्मुख नहीं होते हैं।

सुविधायें–

सुविधाओं से आशय पर्यटक को पर्यटन स्थल पर प्रदान की जाने वाली सुविधाओं से है। इन सुविधाओं के अन्तर्गत जैव विविधता क्षेत्रों में आवास, भोजन, स्वच्छ, पेयजल, मनोरंजन, संचार एवं संवदावाहन, प्रशिक्षित कर्मचारी, सुरक्षा, बैकिंग, स्वास्थ्य, सम्बन्धी सुविधायें तथा अन्य सुविधाओं से है। उपलब्ध सुविधायें पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

विख्यात पर्यटन विद् पीटर्स[अप] महोदय ने पर्यटन आकर्षण हेतु निम्न आधारभूत आकर्षक तत्वों को वर्णन किया है जो सारणी क्रमांक 4. 1 में दिया गया है–

सारणी 3: जैव विविधता एवं वन्य जीव पर आधारित पर्यटन आकर्षण के तत्व

क्र.	प्रमुख आकर्षण के तत्व	आकर्षण की विशेषताएँ
1.	सांस्कृतिक आकर्षण	पुरातात्विक महत्व के स्थान, ऐतिहासिक स्मारक, एवं इमारतें, ऐतिहासिक महत्व के स्थल, आधुनिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आकर्षण, शैक्षणिक, धार्मिक व आर्थिक संस्थायें।
2.	परम्पराओं का आकर्षण	राष्ट्रीय उत्सव, हस्तकला एवं लोक कलायें, संगीत, लोकगीत, लोकनृत्य, प्रथायें एवं परम्परायें।

3.	दृश्य सौन्दर्य आकर्षण	नैसिर्गक सुन्दरता, राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीव, वनस्पतियाँ समुद्री किनारे, पर्वतीय आवासीय स्थल, जल प्रपात, कन्दरायें, भूगर्भिक स्वरूप आदि।
4.	मनोरंजन	खेलों का आयोजन, प्रदर्शनी, चिड़िया घर, सिनेमा व थियेटर कैसिनों, नाइटलाइफ आदि।
5.	अन्य आकर्षण	स्वाथ्यप्रद जलवायु, स्वास्थ्य वर्धक केन्द्र, औद्योगिक आकर्षक।

स्रोत–सिंह, बी.पी. एवं सिंह सतेन्द्र म.प्र. में पारिस्थितिकी पर्यटन।

प्रो. राबिन्सनअपप महोदय ने भी पर्यटन हेतु निम्नलिखित आकर्षणों को गिनाया है जो नीचे सारणी क्रमांक 2 में दिया गया है–

सारणी 4: पर्यटन विकास के लिए आवश्यक कारक एवं आकर्षण

क्र.	**भौगोलिक कारक**	**विशेषताएँ एवं पर्यटन आकर्षण**
1.	**स्थल**	पर्यटन स्थल पर पहुँचने की सहज सुगमता एवं अनुकूल स्थिति।
2.	**क्षेत्र**	पर्यटन स्थल का आकर्षण।
3.	**दृश्य**	भूमि की बनावट–घने वन, पर्वत, सुरंग, समुद्री किनारे आदि।
4.	**वातावरण**	सुहावना मौसम, तापक्रम की दशा, स्नोफाल, रिम झिम बारिश, बादल आदि।
5.	**वन्य जीवन**	वन्य जीवन, पक्षी बिहार, चिड़िया घर, जैविक विविधता
6.	**स्थाई आकर्षण**	शहर नगर ग्राम, ऐतिहासिक विरासत एवं खंडहर, पुरातन खंडहर आदि।
7.	**संस्कृति**	जीवन के पहलू, परम्परायें, लोक एवं हस्तकलायें

स्रोत–सिंह, बी.पी. एवं सिंह सतेन्द्र म.प्र. में पारिस्थितिकी पर्यटन।

सारणी 5: पर्यटन के आकर्षण तत्व

क्र.	**तत्व**
1	सुहावना मौसम ;च्सेंपदह ूमंजीमतद्ध
2	आकर्षक दृश्य ;ैबमदपब ।जजतंबजपवदद्ध
3	जैविक विविधता का आकर्षण
4	वन्य एवं वन्यजीव ;थ्वतमेज ंदक ूपसक सपमि ।जजतंबजपवदद्ध
5	ऐतिहासिक आकर्षण ;भ्पेजवतपबंस ।जजतंबजपवदद्ध
6	धार्मिक आकर्षण ;त्मसपहपवने ।जजतंजबजपवदद्ध

7	सांस्कृतिक आकर्षण ;ब्नसजनतंस ।जजतंबजपवदद्ध
8	सुगम पहुँच ; ।बबमेइपसपजलद्ध
9	बुनियादी सुविधायें ;ठेंपब थ्बपसपजमेद्ध
10	आवासीय सुविधायें ; ।बबवउकंजपवद थ्बपसपजपमेद्ध
11	अन्य सेवायें ;व्जीमत ैमतअपबमेद्ध

स्रोत–सिंह, बी.पी. एवं सिंह सतेन्द्र म.प्र. में पारिस्थितिकी पर्यटन।

उपरोक्त तत्वों के आधार पर यदि हम विन्ध्य प्रदेश में जैव विविधता एवं पर्यटन हेतु आकर्षण तत्वों का विश्लेषण करें तो ज्ञात होता है कि यह प्रदेश जैव विविधता एवं वन्य जीव पर आधारित पारिस्थितिकी पर्यटन की विपुल संभावनाओं को अपने आंचल में समेटे हुए है। यहाँ का सुहावना दृश, सुन्दर वन, घने राष्ट्रीय उद्यान, अभ्यारण्य कल–कल बहती नदियों की सुन्दर धारा नदी के सुन्दर किनारे एवं उसमें बने सुरम्य प्रपात, घाटी एवं कैनियन नदियों के जलीय जीव एवं पक्षी, पन्ना एवं संजय गाँधी राष्ट्रीय उद्यान का अनुपम सौन्दय, विविध प्रजाति के औषधीय दुलर्भ वृक्ष, वन्य जीवों से भरे राष्ट्रीय उद्यान में थिरकते हुए हिरणों के झुंड मानव मन को सहज ही आकर्षित करने वाला है। प्रदेश की जैविक विरासत को यहाँ के घने वनों में स्थित, गुफा, कन्दराओं, घास के मैदान में देखा जा सकता है जो लोगों को मंत्रमुग्ध करने वाला है।

प्रस्तुत शोध पत्र द्वारा विन्ध्य प्रदेश में उपलब्ध जैविक विविधता एवं वन्य जीव पर आधारित जैव विविधता के आकर्षण एवं संभावनाओं का पता लगाने का प्रयास किया गया है। ताकि इन संसाधनों के बल पर इस पिछड़े क्षेत्र में भी विकास की लौ जलाई जा सके।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि विन्ध्य प्रदेश में जैविक विविधता एवं पारिस्थितिकी पर आधारित पर्यटन विकास हेतु बड़ी संख्या में आकर्षण विद्यमान हैं। इस प्रदेश में स्थित 03 राष्ट्रीय उद्यान क्रमशः बांधवगढ़, पन्ना एवं संजय गाँधी राष्ट्रीय उद्यान की जैविक विविधता एवं वन्य जीवों का आकर्षण यहाँ आने वाले पर्यटकों के आकर्षण केन्द्र है। इस विन्ध्यप्रदेश में स्थित खजुराहों, चित्रकूट एवं ओरछा में आने वाले बहुत कम पर्यटकों को यह जानकारी है कि यहाँ के समीपवर्ती राष्ट्रीय उद्यानों में जैविक विविधता एवं पारिस्थितिकी पर्यटन के असीम आकर्षण उपलब्ध है। विन्ध्य प्रदेश में प्राकृतिक, आकर्षण, ग्रामीण धरोहर, वन्य जीव आकर्षण ऐतिहासिक आकर्षण, धार्मिक जैविक एवं अन्य पारिस्थितिकी आकर्षण विद्यमान है।

निष्कर्ष–

विन्ध्य प्रदेश को प्रकृति ने मुक्त हाथों से असीम प्राकृतिक सौन्दर्य प्रदान किया है। यहाँ की पादप विविधता एवं सुन्दर वनों के अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य ने जैव विविधता पर आधारित पर्यटन को जन्म दिया है। पर्यटन का उद्देश्य मनोरंजन, सुख शान्ति, आरामदायक स्थल एवं अवकाश व्यतीत करना है।[अपपप] उपरोक्त सभी उद्देश्यों की पूर्ति विन्ध्य के प्राकृतिक आकर्षणों से युक्त वन स्थलों में उपलब्ध है। इस प्रदेश में प्राकृतिक आकर्षण के तत्व, प्राकृतिक सौन्दर्य, नैसर्गिक छटा, मनोरम प्राकृतिक दृश्य, स्वास्थ्य वर्धक जलवायु, झरने, नदी के किनारे जल प्रपात, घाटियाँ, भूगर्भिक संरचनात्मक स्वरूप आदि है।

विन्ध्य प्रदेश वन्य जीव संसाधन की दृष्टि से सम्पन्न है। इस प्रदेश में वन्य जीवों के लिए अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों ने वन्य जीवों को जहाँ आकर्षित किया है वहीं उनके आवास, भोजन, एवं पानी, की व्यवस्था प्राचीन काल से रही है। अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों के कारण इस प्रदेश में 07 अभ्यारण्य एवं 03 राष्ट्रीय उद्यान बनाये गये है। इन राष्ट्रीय उद्यानों एवं अभ्यारण्यों में बड़ी संख्या में वन्य जीव जैसे शेर, टाइगर, चीता, हाइना भालू जंगली सुअर, हिरन, चीतर, चौसिंघा बारह सिंघा, सांभर, रोझ काला हिरण, खरगोश जैसे अनगिनता स्तन पायी सरीसृप एवं जल जीव पाये जाते हैं। अनुकूल पर्यावरण ने विभिन्न प्रकार की पक्षियों एवं रंग–बिरंगे तितलियों को आकर्षित किया है। यही कारण है कि इस प्रदेश में जैविक विविधता एवं वन्य जीव पर आधारित पर्यटन आकर्षण को जन्म दिया है।

प्रकृति प्रदत्त अनुकूल पारिस्थितियों की देखते हुए अपने देश तथा, देश के ह्रदय स्थल में स्थित मध्यप्रदेश राज्य एवं इस राज्य में स्थित विन्ध्य प्रदेश को एक आदर्श जैव विविधता पर आधारित पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्र होना चाहिए था, किन्तु ऐसा नहीं हो पाया है, जिसके लिए कई कारक उत्तरदायी है। विदेशी पर्यटकों को यहाँ के आकर्षण की जानकारी न होना, पारिस्थितिकी एवं जैव विविधता पर आधारित पर्यटन हेतु टूरिस्ट ट्रैक का विकसित न किया जाना, घने वन एवं जनजातीय गाँवों को अच्छे मार्गों से न जोड़ा जाना पर्यटन आकर्षण के भागों को चिन्हितन करना एवं सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था का न होना पाया गया है। मध्यप्रदेश स्थित विन्ध्य प्रदेश कई प्रकार की जैविक विविधताएँ पर्यावरणीय विभिन्नताओं व अलौकिक आकर्षण को समेटे हुए है, जो दृश्य सौन्दर्य स्थल के रूप में पर्यटन केन्द्रों को जन्म देते है। यहाँ कि घने वन एवं गगनचुम्बी पर्वतों की उपत्यका में कहीं समतल भूमि है तो कहीं ऊँची–नीची

टीलेदार धरती, जिनके बीच में चीरती हुई टेढ़ी–मेढ़ी सरितायें तथा सरिताओं के मार्ग में पड़ने वाले कल–कल करते हुए झरने सहज ही मानव मन को मुग्ध करने वाले है।

विन्ध्य प्रदेश विभिन्न रूचि, प्रवृत्ति प्रकृति वाले पर्यटकों की पर्यटन की इच्छा पूर्ति करने एवं मनोरंजन तथा आनन्द प्रदान करने में समर्थ है। इस प्रदेश में अनेक प्राकृतिक, सांस्कृतिक, पुरातात्विक, धार्मिक, ऐतिहासिक महत्व के स्थल है। यहाँ के महान अतीत को यहाँ के विभिन्न स्थलों को देखा व परखा जा सकता है। इस दृष्टि से विन्ध्य में जैव विविधता पर आधारित पारिस्थितिकी पर्यटन की असीम संभावनायें हैं।

3 संदर्भ–

[1] अरूण कात्यायन (2012) कृषि विज्ञान के मूलभूत सिद्धान्त, किताब महल कानपुर

[2] भारत का राजपत्र, ठपवसवहपबंस क्पअमतेपजल ंबज 2003ए दिनांक 01/10/2013

[3] सिंह, संदीप (2012), उमरिया जिला में पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की समस्याएँ एवं संभावनायें, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध, अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा, पृ.-3, 4

[4] नेगी जगमोहन, पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त, तक्षशिला प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली

[5] नेगी जगमोहन, पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त, तक्षशिला प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली

[6] सिंह ए.पी. हिमालय इन्वायरमेन्ट ऐण्ड टूरिज्म, पृ.-9

[7] भाटिया, ए.के. टूरिज्म इन इन्डिया, हिस्ट्री एण्ड डेवलपमेंट।

[8] सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ प्रकाशित शोध प्रबंध, आशा पब्लिशिंग क. आगरा, पृ-64,68